राज्य परिशिष्ट 6

(यीशु के दृष्टान्त)
खोई हुई भेड़ और खोया हुआ सिक्का

मत्ती 18:12-14 में खोई हुई भेड़ का दृष्टांत और
लूका 15:8-10 में खोए हुए सिक्के का दृष्टांत
परमेश्वर के राज्य में खोए हुए लोगों के प्रति परमेश्वर की मनोवृत्ति के बारें में हैं

क. खोई हुई भेड़ (मत्ती रचित सुसमाचार में)

पढ़ें मत्ती 18:12-14।

1. दृष्टांत की प्राकृतिक कहानी को समझें।

सिखाएं। कहानी लगभग वही है जो लूका 15:1-7 में है।

---

2. तत्काल संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का समायोजन, कहानी और स्पष्टीकरण या लागूकरण क्या है? ***ध्यान दें।***

हालाँकि मत्ती रचित सुसमाचार और लूका रचित सुसमाचार में खोई हुई भेड़ का दृष्टांत एक दूसरे से मिलते जुलते हैं, वे *समानांतर नहीं* हैं। यह एक उदाहरण है कि कैसे यीशु ने उसी दृष्टांत का प्रयोग अलग संदर्भ में किया एक दूसरा संदेश या पाठ को सिखाने के लिए।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन मत्ती 18:1-11 में निहित है।

यीशु के चेलें आपस में झगड़ रहे थे कि परमेश्वर के राज्य में उनमे से सबसे बड़ा कौन है। यीशु जानते थे कि वे क्यों लड़ रहे थे, इसलिए उन्होंने तीन चीजें कीः उन्होंने उन्हें एक उदाहरण, एक चेतावनी और एक काम दिया। उन्होंने एक बालक को उदाहरण के रूप में प्रयोग किया यह बताने के लिए कि चेलों को कैसा बनना चाहिए, उन्होंने उन्हें दूसरें लोगों के लिए पाप में गिरने का कारण बनने के प्रति चेतावनी दी, और उन्होंने उन्हें खोई हुई भेड़ का दृष्टांत बताया कि उन्हें अपने दैनिक जीवन में क्या करने में व्यस्त होना चाहिए।

यीशु अपने चेलों को एक उदाहरण देते हैं। वह उन्हें परिवर्तित होने और ''छोटे बालकों के समान'' बनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उनकी सांसारिक महत्वाकांक्षा और बड़े बनने की भूख को सबसे छोटा बनने के लिए इच्छुक होने का स्थान तैयार करना चाहिए। एक बच्चे के साथ जुड़े कुछ अनुकूल गुण सादगी, स्पष्टता, आज्ञाकारिता, सादापन, और विशेषरूप से नम्रता और विश्वासशीलता होते हैं।

यीशु अपने चेलों को चेतावनी देते हैं। यीशु उन्हें चेतावनी देते हैं कि वे सावधान रहें कि किसी भी 'परमेश्वर की संतान' आर्थात मसीहियों के लिए, चाहे वे बालक हों या परिपक्व हों, पाप में गिरने

का कारण न बनें। चेलों का चालचलन परमेश्वर की संतानों के लिए ठोकर खाने और पाप में गिरने का कारण बन सकता है। विशेष रूप से अपने साथियों से बड़ा बनने और उन पर शासन करने की ललक न केवल निष्क्रिय रवैया है, बल्कि एक सक्रिय उपकरण है जिसके द्वारा लोगों को चोट पहुँच सकती है और यह उनके लिए ठोकर खाने का कारण बन सकता है। इसके बजाय, चेलों को परमेश्वर की संतानों का, जो कि मसीही हैं, अधिक आदर कारना चाहिए (रोमियों 12:10), क्योंकि परमेश्वर उनका इतना आदार करते हैं कि उन्होंने अपने सेवा ठहल करने वाले स्वर्गदूतों को उनकी देखभाल करने के लिए नियुक्त किया है (इब्रानियों 1:14)।

यीशु अपने शिष्यों को एक कार्य देते हैं। यीशु उन्हें परमेश्वर की उन संतानों को वापस लाने के लिए समर्पित होना सिखातें हैं, जो भटक गए हैं या पिछे हट गए हैं। इस दृष्टांत का संदर्भ, लूका 15 में इसी दृष्टांत के संदर्भ से काफी अलग है।

(2) इस दृष्टांत की कहानी मत्ती 18:12–13 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण मत्ती 18:13–14 में निहित है।

जब यीशु कहते हैं कि चरवाहा उस एक भेड़ के मिल जाने पर बहुत खुश होता है जो खो गई थी, उन निन्यानबे भेड़ों को छोड़ कर जो कि खोई नहीं थी, तो उनके कहने का अर्थ यह नहीं था कि वह उन निन्यानबे भेड़ों के लिए खुश नहीं था। वह केवल इस तथ्य पर जोर देना चाहते हैं कि जब एक कलीसिया से खोए हुए मसीही को ढूढ़ा जाता है और वह मिल जाता है, तो परमेश्वर बहुत प्रसन्न होते हैं।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत की कहानी में कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?
ध्यान दें।

इस दृष्टांत का संदर्भ, लूका 15:1–7 में इसी दृष्टांत के संदर्भ से काफी अलग है। इसलिए इस दृष्टांत के विवरण भी अलग–अलग वास्तविकताओं का संकेत देंगे।
सौ भेड़ें परमेश्वर की संतानों, मसीहियों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

खोई हुई भेड़ परमेश्वर की संतान का प्रतिनिधित्व करती है, एक मसीही जो कि मसीही कलीसिया और मसीही विश्वास से भटक गया है।

अन्य निन्यानबे भेड़ें कलीसिया में अन्य मसीहियों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो खोए नहीं थे। लेकिन वे इस दृष्टांत में *एक प्रासंगिक विवरण तैयार नहीं करती* और केवल एक पृष्ठभूमि के रूप में काम करती हैं, अधिक स्पष्ट रूप से एक खोए हुए मसीही की ओर ध्यान आकर्षित करती हैं। इस दृष्टांत में चरवाहे के हृदय पर जोर दिया गया है, यहाँ तक कि एक भेड़ के प्रति भी जो कि खो गई थी, विशेषरूप से जब वह अपरिपक्व बालक या किशोर है (मत्ती 18:5–10)! झुण्ड में यथास्थिति को बनाए रखने की तुलना में एक खोई हुई भेड़ को वापस लाने में चरवाहे को अधिक खुशी होती है। उसकी उमंग यह है कि उसकी एक भी भेड़ खोनी नहीं चाहिए! अंततः एक भी भेड़ नहीं खोई (यूहन्न 17:12; यूहन्ना 18:9)!

लेकिन लूका 15:1–7 में खोई हुई भेड़ के अन्य दृष्टांत में, 99 भेड़ों की तुलना खोई हुई भेड़ से कि गई है इसलिए 99 भेड़े प्रासंगिक विवरण है। यहाँ *99 भेड़ें यहूदियों का प्रतिनिधित्व करती है* जो चुंगी लेने वालों और पापियों की परवाह करने के लिए यीशु की निंदा करते हैं (लूका 15:1)। चरवाहे को इस एक अविश्वासी जो कि अब विश्वासी बन चुका है, के लिए अधिक प्रसन्नता होती है उन अन्य 99 लोगों की अपेक्षा जो सोचते हैं कि उन्हें विश्वास में आने की आवश्यकता नहीं।

चरवाहा सब बातों के ऊपर परमेश्वर पिता का प्रतीक है, जो पवित्र त्रिएकता का प्रतिनिधित्व करता है। सभी भेंड़े उसी की हैं और वह नहीं चाहता कि इन छोटों में से कोई भी खोए।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

मत्ती 18:12–14 में खोई हुई भेड़ का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में खोए हुए लोगों के प्रति परमेश्वर की मनोवृत्ति" के बारे में सिखाता है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "परमेश्वर की इच्छा प्रगट है कि उनकी एक भी भेड़ नाश न हो, लेकिन वे सब पूर्ण रूप से बचाई जाएं। अपने खोए हुए बच्चों के प्रति प्रेम की तड़प कारण बनती है कि परमेश्वर उन्हें खोजे और वापस कलीसिया में लाए।

परमेश्वर/यीशु मसीह एक मसीही जो खो गया था उसके विषय में उन 99 मसीहियों से अधिक आंनदित नहीं है जो कि खोए नहीं थे। उनका एक शुभचिंतक होने का आनंद जो कि खोई हुई भेड़ को खोजता, पाता और वापस लाता है, विश्वासियों का अधिकारी मात्र होने से बढ़कर है (यशास्थिति बनाए रखने)! यहाँ खोई हुई एक भेड़ पर नहीं, लेकिन चरवाहे पर जोर दिया गया है जो खोई हुई भेड़ को खोजता, पाता और वापस लाता है। जोर उन लोगों के प्रति परमेश्वर के प्रेम और उमंग पर है जो सही मार्ग से भकट जाते हैं।"

भटके हुए और खोए हुए लोगों को वापस लाने के लिए उन्हें खोजना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग यीशु मसीह के नक्शेकदम पर चलते हैं और जो लोग मसीही कलीसिया और मसीही विश्वास से भटक गए हैं उन्हें ढ़ूढ़ कर वापस लाने के लिए बाहर जाते हैं।

---

5. दृष्टांत की तुलना बाइबल में समानांतर और विषम लेखांशो के साथ करें।

पढ़ें व्यवस्थाविवरण 5:29; भजन. 119:176; यशायाह 45:22–23; 48:17–19; यहेजकेल 18:23,32; 33:11; मत्ती 9:37–38, 11:28–29; 23:37; यूहन्ना 7:37; याकूब 5:19–20; 2पतरस 3:9; प्रकाशितवाक्य 22:17।
खोजें और चर्चा करें। यह प्रत्येक लेखांश जो कुछ सिखाते हैं, उसकी तुलना हम उससे किस प्रकार कर सकते हैं जो यह दृष्टांत सिखाता है?
ध्यान दें।

यह महिमामय तथ्य कि परमेश्वर नहीं चाहते कि उनके छोटों (परमेश्वर की संतानों) में से कोई भी खोए, बाइबल की शिक्षा के अनुरूप है। यीशु ने कहा, ''जिन्हें तू ने मुझे दिया उनमे से मैं ने एक को भी न खोया'' (यूहन्ना 18:9)! दृष्टांत का लागूकरण दर्शाता है कि भटके हुए व्यक्ति की अपेक्षा परमेश्वर (यीशु मसीह) पर अधिक जोर दिया या है, जो कि भटके हुए व्यक्ति को खोज रहे हैं!

ख. खोया हुआ सिक्का

पढ़ें लूका 15:8-10

1. दृष्टांत की स्वभाविक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

चांदी का सिक्का, जो खो गया था, लगभग एक दिन की मजदूरी के बराबर था। एक मजदूरी करने वाले के लिए वह बहुत पैसा था! हो सकता है कि महिला ने दस चांदी के सिक्कों को चेन में लगा कर अपने गले में पहना हो, या फिर संभावित रूप से उसने उन्हें एक छोटे कपड़े में लपेट कर अपनी पोशाक से बांधा हो। हो सकता है कि चेन टूट गई हो या फिर गाँठ ढीली हो गई हो, जिसके परिणामस्वरूप एक सिक्का गिर कर खो गया हो। यीशु के दिनों में गरीब लोगों के घर बहुत छोटे वासस्थान हुआ करते थे, जिनका फर्श गंदा होता था और उनमे या तो खिड़की नहीं होती थी या फिर बहुत छोटी खिड़की होती थी। क्योंकि उसके घर में अंधेरा था, इसलिए उसे सिक्का नहीं मिला। लेकिन दीपक जाला कर पूरे फर्श को झाड़-बुहारकर, उसे अपना सिक्का मिल गया। अपने आनंद में उसने अपनी सहेलियों और पड़ोसियों को बुलाया और जो कुछ हुआ वह उन्हें बताया।

---

2. तात्कालिक संदर्भ की जांच करें और दृष्टांत के तत्वों को निर्धारित करें।

खोजें और चर्चा करें। दृष्टांत का समायोजन, कहानी और व्याख्या या लागूकरण क्या है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत का समायोजन लूका 15:1-7 में खोई हुई भेड़ के दृष्टांत के समना है।

(2) इस दृष्टांत की कहानी लूका 15:8-9 में निहित है।

(3) इस दृष्टांत की व्याख्या या लागूकरण लूका 15:10 में निहित है।

---

3. दृष्टांत के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत में कहानी का कौन सा विवरण वास्तव में आवश्यक या प्रासंगिक है?

ध्यान दें।

(1) इस दृष्टांत को एक रूपक (रूपकात्मा ढ़ग से) के समान देख रहे हैं।

कुछ व्याख्याकार इस व्याख्या के साथ आए हैं कि ''महिला'' पवित्र आत्मा का प्रतीक है। वे निष्काशन कि एक प्रक्रिया द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं। खोए हुए पुत्र के दृष्टांत में ''पिता'' परमेश्वर पिता का प्रतिनिधित्व करता है। खोई हुई भेड़ के दृष्टांत में ''वह व्यक्ति जिसके पास सौ भेड़ें थी'' परमेश्वर पुत्र का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रकार खोए हुए सिक्के के दृष्टांत में ''महिला'' पवित्र आत्मा का प्रतिनिधित्व करती है।

अन्य लोग ''महिला'' की व्याख्या कलीसिया के रूप में करते हैं। ''दीपक'' सुसमाचार की ओर संकेत करता है। ''झाड़ू'' (जिसका उल्लेख भी नहीं हुआ) व्यवस्था का द्योतक है। ये व्याख्याएँ सही नहीं हैं और इन्हें अस्वीकार किया जाना चाहिए।

यीशु की व्याख्या। यीशु इस दृष्टांत के विभिन्न विवरणों को कोई अर्थ नहीं देते। लेकिन वह दृष्टांत को परमेश्वर और उनके स्वर्गदूतों के प्रतिनिधित्व के रूप में समझाते जो एक भी खोया हुए व्यक्ति के पश्चयाताप करने और उनकी की ओर फिरने पर स्वर्ग में आंनद मना रहे हैं।

---

4. दृष्टांत के मुख्य संदेश को पहचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टांत का मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

लूका 15:8–10 में खोए हुए सिक्के का दृष्टांत ''परमेश्वर के राज्य में खोए हुए लोगों के प्रति परमेश्वर की मनोवृत्ति'' के बारे में सिखाता है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। ''परमेश्वर जो की अपने स्वर्गदूतों की उपस्थिति में वास करते हैं, खोए हुए लोगों को खोज रहे हैं और यदि उनमें से एक भी पश्चयाताप करता या परिवर्तित होता है तो उस पर आनंदित होते हैं।''

खोए हुए और भटके हुओं को वापस लाने के लिए खोजना, परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के लोग यीशु के नक्शेकदम पर चलते हैं और भटके हुओ और खोए हुओ को खोजने के लिए बाहर जाते हैं और उन्हें वापस लाते हैं ताकि वे बचाए जा सकें।

---

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत लेखांशो के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

खोए हुए पुत्र के दृष्टांत को देखें।
